सम्पादक के नाम

दक्षिण अफ्रीका ने क्रिकेट टीम में अश्वेतों के कम प्रतिनिधित्व पर प्रभावी क़दम उठाने का अडिग फैसला लिया

सैकड़ों वर्षों की गुलामी ने दक्षिण अफ्रीका के मूल-निवासियों को अशक्त और पिछड़ा बना दिया था। लगातार शोषण, उत्पीड़न, भेदभाव, उपेक्षा ने उन्हें आर्थिक-शैक्षिक-राजनीतिक रूप से सबसे निचले पायदान पर पहुंचा दिया था।

अफ्रीकन नैशनल कांग्रेस और नेल्सन मंडेला के लंबे संघर्ष के बाद दक्षिण अफ्रीका ने अपनी गुलामी के जुए को उतार फेंका। दो दशक से भी ज़्यादा समय तक अंग्रेजों की क़ैद में रहने के बाद और फिर अपनी आज़ादी के बाद पहले चुनाव में प्रचंड जीत के साथ ही नेल्सन मंडेला राष्ट्रपति बनें।

सदियों की गुलामी, भेदभाव, शोषण व उपेक्षा से अशक्त बना जनगण अब गर्व के साथ अपना सर उठाकर चलने की कोशिश कर रहा है। लेकिन गोरे साम्राज्यवाद के ज़हर को पूरी तरह से मिटाने में अभी काफ़ी वक्त लगेगा।

ऐसे ही जिम्बाब्वे भी सदियों से अंग्रेजों का गुलाम था। कुर्बानियाँ देकर अपनी आज़ादी हासिल की। राष्ट्रपति रोबर्ट मुगाबे ने जब देश में बसे हुए अंग्रेज़ों से ज़मीने ज़ब्त करने का आदेश दिया तो क्रिकेट टीम के एक अश्वेत खिलाड़ी ने इस ज़ब्ती की कड़ी मुख़ालफ़त की। क्योंकि देश से ज़्यादा उसे अपने हितों की फिक्र थी। जिम्बाब्वे के क्रिकेट बोर्ड और टीम में तब और आज भी अंग्रेज़ों का ही बोलबाला है। उस अश्वेत खिलाड़ी को डर लगा होगा कि अगर सरकार के फैसले की मुख़ालफ़त न की तो हो सकता है कि गोरों के नियंत्रण वाला क्रिकेट बोर्ड व उसे टीम से ही हटा दे।

हर देश के अंदर इस या उस तरह की परिस्थितियां लंबे अरसे या सदियों से रहीं हैं, जिन्होनें देश की एक बड़ी आबादी के साथ वही किया जो अंग्रेज़ों ने दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे में किया था। नाम और तरीके अलग-2 हो सकते हैं लेकिन शोषण-भेदभाव-उपेक्षा आदि का मूल स्वरूप नहीं बदल सकता, नस्ली भेदभाव व शोषण हो या जातीय भेदभाव व उत्पीड़न...

लेकिन हमारे देश की स्थिति और भी ज़्यादा करुणाजनक है। ब्रिटिश साम्राज्यवादी गुलामी के 200 वर्षों के साथ-2 हज़ारों वर्षों के चातुर वर्ण-व्यवस्था से पैदा हुई अकल्पनीय अमानवीय त्रासदी ने इस देश के मेहनतकश उत्पादक वर्ग को शोषण की ऐसी चक्की में पीसा, जिसकी मिसाल सारे इतिहास में कहीं नहीं मिलती। मेहनतकश जनता के द्वारा पैदा किये गए अतिरिक्त मूल्य को हड़पकर भोग-विलास में डूबे हुए शोषक वर्ग ने गुलामी की ऐसी अदृश्य ज़ंजीरें गढ़ दी हैं कि उन्हें तोड़ पाना पिछले हज़ारों वर्षों में भी संभव नहीं हो पाया।

गुलाम प्रथा को चुनौती देते हुए यूनान देश में स्पार्टकस हमें विश्व इतिहास के रंगमंच में दिखाई देता है। तमाम देशों में साम्राज्यवाद की गुलामी की जंज़ीरों को उखाड़कर-तोड़कर फेंकनें वाले महात्मा गांधी, सिमोन बोलिवार (लैटिन अमेरिका) जैसे राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के योद्धा दिखाई देते हैं, हर तरह के शोषण को ख़त्म करने की अदम्य लालसा रखने वाले और सफल क्रांतियों के नायक लेनिन(रूस), माओ त्से तुंग (चीन), किम इल शुंग (उत्तरी कोरिया), हो ची मिन्ह (विएतनाम), फिडेल कास्त्रो (क्यूबा) दिखाई देते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान में ऐसा क्यों नहीं है? मानसिक गुलामी ने क्यों इतना दिल-दिमाग को जकड़ लिया है कि यहाँ सामाजिक-आर्थिक आज़ादी व समानता के लिए संघर्ष, जद्दोजहद, बग़ावत क्यों नहीं दिखाई देती?

साम्राज्यवादी गुलामी और नस्लीय भेदभाव व शोषण से भी हज़ार-लाख गुना ज़्यादा खराब "धार्मिक दर्शन व वर्ण/जाति व्यस्था पर आधारित शोषण, उत्पीड़न, शोषण व भेदभाव होता है।

हिन्दुस्तान की सच्चाई यही है। इस सवाल के माकूल जवाब के बिना आगे बढ़कर काम करना बहुत मुश्किल है.....

- साइबर नजर

अखबार में अखिलेश यादव द्वारा छोड़े गये बंगले के भीतर की तस्वीरें देखकर बडा दुख हुआ

सरकारी आवास है । जब अखिलेश वहाँ रहने गये 42 करोड खर्च करके अपने लायक बनाया यह पैसा जनता का था । अब कोर्ट के आदेश से बंगला खाली हुआ तो भीतर की फर्स , दीवारों की छपाई , टायल्स , वाथरूम , स्विमिंग पूल , किचेन , लाईट व्यवस्था , सब कुछ जैसे घन हथौडा मारकर तहस नहस किया गया है । फर्नीचर अन्दर के दरबाजे भी तोडे गये हैं । एक पूर्वमुख्यमन्त्री द्वारा यह छुद्र काम किया जाना जता देता है कि सपा कभी अपनी गुण्डागर्दी की छवि से नही मुक्त हो सकती हैं । सत्ता का अहंकार तो चला गया मगर शक्ति का अहंकार छलक रहा है जब पार्टी का मुखिया अपनी धमक नही सँभाल सकता तो अपने पीछे लगी गुण्डों की फौज को क्या खाक रोकेगा ? सपा पर गुण्डागर्दी के आरोप झूठे नही है किसी कस्बे गाँव और छोटे शहर जाईए हजार उदाहरण मिलेगे । गुण्डागर्दी करते थे थानो मे एफ आई आर नही होती थी । जमीन कब्जाने का रिकार्ड बसपा नेताओं और सपाईयों दोनो के पास बराबर हैं ।अब इस बंगले के सुधार में भी जनता का पैसा लगेगा ।यूपी सरकार को कडी कारवाई करते हुए सारे नुकसान को अखिलेश यादव से वसूलना चाहिए

वामपंथी दल ऐसे लोगों का साथ देकर अपनी इमानदार छवि को खराब कर रहे हैं साम्प्रदायिकता का विकल्प भृष्टाचार , गुण्डागर्दी , सत्ता की हनक से लूट शोषण और लोगों का घर बार छीनना नही हो सकता है ।.....

- उमाशंकर सिंह परमार

सीबीएसई ने नीट में सवर्ण छात्रों को आरक्षित कर दिया है

सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले के बाद सीबीएसई ने देशभर में इसे लागू कर दिया है। इसके अनुसार? आरक्षित वर्ग का उम्मीदवार चाहे सबसे ज्यादा नंबर ले आए लेकिन वह सिर्फ आरक्षित कोटे में ही नौकरी पाएगा? यानि सवर्णों के लिए 50-50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था कर दी गई है।

SC, ST, OBC के ख़िलाफ़ आज़ादी के बाद का यह सबसे बड़ा फ़ैसला है, ? लेकिन हम चुप हैं, क्योंकि? हम एक मरे हुए समाज के नागरिक हैं! यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं है।?

बाबा साहेब ने कारवाँ को जहाँ तक पहुँचाया था, वह पीछे जा रहा है। आने वाली पीढ़ी हमें गालियाँ देंगी कि हम कितने रीढविहीन थे।

क़लम की नोक पर एक झटके में SC, ST, OBC के नौ हज़ार स्टूडेंट्स इस साल डॉक्टर बनने से रह जाएंगे। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया है कि 50-50 प्रतिशत सीटों पर SC, ST, OBC का कोई नहीं आ सकता। जनरल मेरिट में टॉपर हो, तो भी नहीं।?

केंद्र सरकार इसके ख़िलाफ़ अपील करने की जगह, तत्परता से इसे लागू कर रही है।

मामला सिर्फ़ मेडिकल का नहीं है। आगे चलकर यह आदेश इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और यूपीएससी, एसएससी और पीसीएस तक आएगा। कई राज्यों में यह पहले से लागू है। लाखों स्टूडेंट्स पर असर पड़ेगा।

मुझे नहीं मालूम कि समाज की नींद कैसे खुलेगी। हमारे पॉलिटिकल क्लास की चिंताओं में यह कैसे शामिल हो पाएगा।

जो नेता इस मुद्दे को उठाएगा, उस पर फ़ौरन भ्रष्टाचार का केस लग जाएगा।? क्या हम उस नेता के साथ खडें होंगे? अगर नहीं, तो कोई नेता जोखिम क्यों लेगा?

पाँच हज़ार लोग भी सड़कों पर आ जाएँ, सारे लोग अपने जनप्रतिनिधियों पर दबाव डालें, तो आपके समाज के लाखों बच्चों का भविष्य बच जाएगा।

लेकिन क्या आप अपने बच्चों को बचाना चाहते हैं?

-दिलीप मंडल

कचोटने वाली चुप्पी

अगर एक महीने में दिल्ली में 10 गाएं मर जाएं तो हंगामा मच जाएगा और लोग सड़कों पर निकल जाएंगे। इसी शहर में एक महीने में 10 दलित सीवर कर्मचारियों को मौत हो गई लेकिन एक आवाज़ नहीं उठी. ये चुप्पी कचोटने वाली है।

कोई भी व्यक्ति दूसरे का मल-मूत्र साफ़ नहीं करना चाहता लेकिन सामाजिक ढांचे के कारण दलित ये काम करने के लिए मजबूर हैं. जब हम मंगलयान तक जाने का सोच सकते हैं तो इस समस्या से क्यों नहीं निपट पा रहे हैं।

-गंगादीन लोहार

संघ क्या है?

अशोक कुमार पांडे

प्र. संघ क्या है?

उ. संघ आज़ादी की लड़ाई को कमज़ोर करने के लिए बनाया गया संगठन है जिसने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने की जगह हिन्दू मुस्लिम खाई को बढ़ाकर अंग्रेज़ों की फूट डालो और राज करो नीति में सहायता की। इनकी निष्क्रियता से चिढ़कर सावरकर ने लिखा था

- *संघ कार्यकर्ता के स्मारक पर लिखा होगा, यह पैदा हुआ, इसने शाखा खेली, बैठक की, भोजन किया, मर गया*.

एक इंटरव्यू में गोलवलकर ने कहा था - *संघ का कार्यकर्ता जमूरे की तरह होताहै, इसे हम जो काम देते हैं बिना सवाल किये पूरा करता है, हमारे लोग राजनीति में रहकर भी संघ कार्य करते हैं।* इस तरह आर एस एस सांस्कृतिक संगठन होने का भ्रम बनाकर पर्दे के पीछे से खेल खेलता है। यह कोई सदस्य सूची नहीं मेंटेन करता ताकि जब इसके लोग ग़ैर कानूनी गतिविधि में पकड़े जाएं तो कह सके कि इनसे हमारा कोई लेना देना नहीं।

प्र. संघ का उद्देश्य क्या है?

उ. संघ का उद्देश्य है हिंदुत्व के नाम पर लोगों को उल्लू बनाकर एक तरफ़ टाटा-बिड़ला-अम्बानी-अडानी जैसों को लूट की छूट देना और दूसरी तरफ़ दलितों, पिछड़ों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों को हाशिये पर डाल कर एक तानाशाही वाला सवर्ण राज्य स्थापित करना। चाहें तो गोलवलकर को पढ़ लें जिन्होंने न केवल जाति व्यवस्था का समर्थन किया था बल्कि महिलाओं की बराबरी का विरोध भी।

प्र. यह लक्ष्य संघ कैसे प्राप्त करेगा?

उ. समाज मे भयानक फूट डालकर, मज़दूरों और कर्मचारियों के ख़िलाफ़ नीतियां बनाकर और शिक्षा का सत्यानाश करके।

प्र. संघ का राजनीति से क्या रिश्ता है?

उ. वही जो लुटेरे का चोरी से होता है।

प्र. भाजपा से संघ का रिश्ता है?

उ. वही जो मदारी का जमूरे से होता है।

प्र. संघ केवल हिंदू संगठन की ही बात क्यों करता है, क्या यह धार्मिक संगठन है?

उ. इसका पारम्परिक हिन्दू धर्म से कोई लेना देना नहीं। न यह विवेकानंद की उदार व्याख्या को मानता है न ही यह दयानंद के अंधविश्वासों के ख़िलाफ़ चले आंदोलनों को। यह हिदुंत्व की व्याख्या हिटलर के नस्ली शुद्धता के सिद्धांत पर करता है और वर्णाश्रम को स्थापना की वकालत कर दलितों, स्त्रियों, आदिवासियों को अधिकार दिए जाने का विरोध करता है। इसके लिए धर्म एक अवसरवाद है। इसके सिद्धांतकार कहेंगे कि सब भारतीय हिन्दू हैं फिर किसी अफलू खान की हत्या कर देंगे और मृत पशुओं का चमड़ा उतारने वाले दलितों पर अत्याचार होने पर कहेंगे कि गाय मनुष्य से अधिक क़ीमती है। लेकिन बीफ़ के हिन्दू कारोबारियों से कुछ नहीं कहेंगे।

प्र. क्या संघ का गणवेश (यूनीफॉर्म) बाधा नहीं है?

उ. बिल्कुल नहीं, क्योंकि गणवेश का चड्डा हिटलर और टोपी इटली के तानाशाह मुसोलिनी से ली गई है। पहले ये चमड़े की बेल्ट भी लगाते थे पर अंग्रेज़ों की आपत्ति के बाद उतार दिया गया। आप बताइए खाकी पैंट और व्हाइट शर्ट किस हिन्दू परम्परा से ली गई है?

प्र. शाखा क्या है?

उ. शाखा असल मे सुबह सुबह लोगों के दिमाग मे ज़हर भरने की जगह है। किसी पार्क में लट्ठ चलाने की प्रैक्टिस के साथ मुसलमानों के लिए ज़हर भरने का काम नागपुर से तनख्वाह लेने वाला कोई स्वयंसेवक करता है। इसमें गरीब और मध्यवर्ग के बच्चे आते हैं जो फिर किसी रईस के स्वार्थ के अनुसार दंगों में चाकू चलाने का काम करते हैं। आपने किसी रईस के बेटे को शाखा में जाते देखा है? यही नहीं शाखाओं में स्त्रियों का प्रवेश भी वर्जित है। आर एस एस का प्रमुख एक क्षत्रिय को छोड़कर हमेशा चित पावन ब्राह्मण ही रहा है।

प्र. हिंदू राष्ट्र क्या है ?

उ. इकलौता हिन्दू राष्ट्र था नेपाल। उसकी समृद्धि से आप परिचित हैं ही। आज दुनिया मे कोई आधुनिक राष्ट्र धर्म केंद्रित नहीं है। वैसे संघ के हिन्दू राष्ट्र का मतलब है एक तानाशाही राष्ट्र जिसमें सवर्ण पुरुष अम्बानी अडानी के हितों के लिए दलितों, अल्पसंख्यकों, महिलाओं, आदिवासियों और गरीबों को दबाकर रखें।

प्र. वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन), अँग्रेज़ी माध्यम और स्वयंसेवक के विषय में क्या विशेष?

उ. कभी संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग करने वाला संघ आज अपने आकाओं के आदेश पर अंग्रेज़ी के सामने नतमस्तक है। अवसरवाद का इससे बड़ा सबूत क्या होगा! हां अपने शिशु मंदिरों में यह वही झूठा इतिहास हिंदी में पढ़ाता है ताकि अंध धार्मिक भक्तों की फौज मिलती रहे।

- अशोक कुमार पांडे

शिक्षा और सकारात्मक सोच का समागम

आज बच्चों में नैतिकता प्राय: लुप्त होती जा रही है। चारों ओर उदण्डता और असामाजिकता का बोल-बाला है। इसका मूल कारण है चरित्र का पतन होना। हमें मूल रूप से चरित्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बच्चों में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना होगा। इसके साथ-साथ उनकी सोच को सकारात्मक बनाना होगा जिससे हम एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकें। एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण देश के शिक्षकों पर निर्भर करता है और यह तभी संभव है जब बच्चों को शैक्षणिक शिक्षा के साथ स्कूल में अच्छे संस्कार दिए जाएँ।

जिस प्रकार एक पेड़ को फलने- फूलने के लिए प्रकृति पूर्ण रूप से सहयोग करती है व उसे पूरा वातावरण प्रदान करती है उसी प्रकार बच्चों को भी सभी पोषक तत्व आवश्यक होते हैं। जिससे वो अपनी दक्षता, निपुणता, प्रकृति, परिवार, समाज को समझकर अपने व्यक्तित्व का विकास करें। प्रकृति हमें सबसे प्रेम करना सिखाती है। प्रकृति सदैव हमें कुछ न कुछ प्रदान करती है बदले में कुछ नहीं माँगती है। हम बच्चों को यह सिखाएँ कि यह संसार भी एक परिवार की भांति है। यह परिवार प्रेम के बल पर ही चल रहा है। इस प्रकार की सकारात्मक सोच का प्रभाव बच्चों पर अवश्य पड़ता है। हम निजी स्वार्थ पर बल न देकर राष्ट्र के उत्थान की भावना पर ज़ोर दें। समाज में शिक्षक एक वट वृक्ष की भाँति होता है जो वास्तव में तभी समाज में सम्मानित होता है जब वह अपनी अगली पीढ़ी में देश-प्रेम कूट-कूट कर भर देता है।

यदि हम बच्चों को उनकी ऊर्जा व शक्ति को अच्छे कार्यों में व्यय करना सिखाएँ तो अवश्य ही समाज की दिशा एवं दशा दोनों में परिवर्तन आएगा। तभी हम एक शांतिप्रिय, निर्भीक एवं संपन्न समाज का निर्माण कर पायेंगे।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल